© M. K. Pandey

।। जन्म पत्रिका ।।

Jyotish and Research

"भ्रम से दूर केवल ज्योतिष"



।। ॐ गं गणपतये नमः ।।

नाम : मीनाक्षी

स्थान : माजरा (हिमांचल प्रदेश)

दिनांक : 07 जुलाई 1985

जन्म विवरण

नाम	मीनाक्षी
दिनांक	31/07/1985
समय	07 : 55 प्रातः
स्थान	माजरा (हिमांचल प्रदेश)
लिंग	स्त्री
अयनांश	लाहिरी (023°39'18")
डी एस टी	0
मंगल दोष	हाँ (उच्च)
राशि	सिंह
आयू	36 व 7 मा 8 दि
दशा भोग्य	सू 2 व 8 मा 1 दि

दैनिक पंचांग

पक्ष	शुक्ल
तिथि	पूर्णिमा
नक्षत्र(च)	ऊ(0)षा।(3)
हिन्दू दिन	बुधवार
अंग्रेजी दिन	बुधवार
योग	प्रीति
करण	विष्टी
सूर्य उदय	05-37-17
सूर्य अस्त	19-15-17

व्यक्ति विवरण

लिंग	स्त्री
जन्म दिनांक	31/07/1985
जन्म समय	07:55 प्रातः
इष्ट काल	005-44-17
जन्म स्थान	माजरा
टाइम जोन	5.5
अक्षांश	30 : 28 : N
रेखांश	77 : 31 : E
स्थानीय समय संशोधन	00 : 19 : 56
युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
स्थानीय औसत समय	07 : 35 : 03
जन्म समय - जी एम टी	02 : 25 : 00
तिथि	पूर्णीमा
हिंदु दिन	बुधवार
पक्ष	शुक्ल
करण	विष्टि
सूर्योदय	05 : 37 : 17
सूर्यास्त	19 : 15 : 17
दिन अविधि	13 : 37 : 59

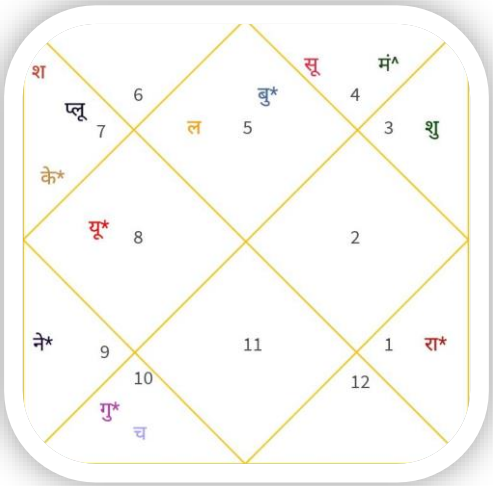
ग्रह स्थिति

ग्रह	राशी	अंश	नक्षत्र	पद
लग्न	सिंह	$12^0$29’48”	मघा	(4)
सुर्य	कर्क	$14^0$11’28”	पुष्य	(4)
चंद्र	मकर	$04^0$03’58”	उ0षा।	(3)
मंगल (अ)	कर्क	$10^0$11’03”	पुष्य	(3)
बुध (व)	सिंह	$01^0$15’59”	मघा	(1)
गुरु (व)	मकर	$18^0$58’57”	श्रवण	(3)
शुक्र	मिथुन	$03^0$45’41”	मृगशिरा	(4)
शनि	तुला	$27^0$50’59”	विशाखा	(3)
राहु (व)	मेष	$20^0$18’51”	भरणी	(3)
केतु (व)	तुला	$20^0$18’51”	विशाखा	(1)
यूरेनस (व)	वृश्चिक	$20^0$33’34”	ज्येष्ठा	(2)
नेप (व)	धनु	$07^0$37’00”	मूल	(3)
प्लूटो	तुला	$08^0$20’48”	स्वाति	(1)

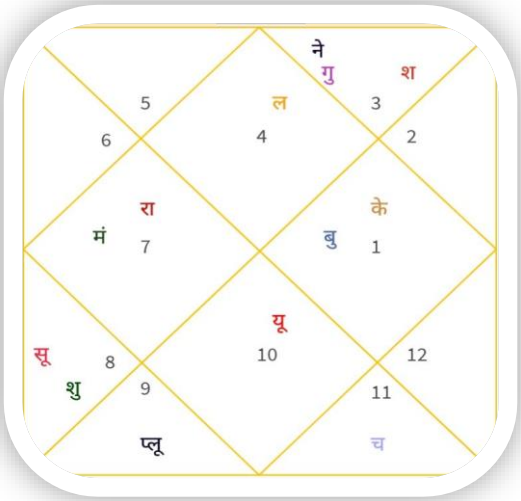
विष्णोत्तरी अंतर्दशा

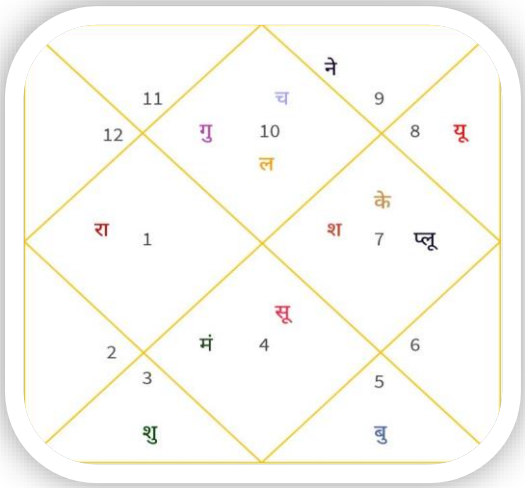
गु/गु	20/05/2025
गु/श	01/12/2027
गु/बु	08/03/2030
गु/के	14/02/2031
गु/शु	14/10/2033
गु/सू	01/08/2034
गु/च	01/12/2035
गु/मं	08/11/2036
गु/रा	01/04/2039

लग्न कुंडली

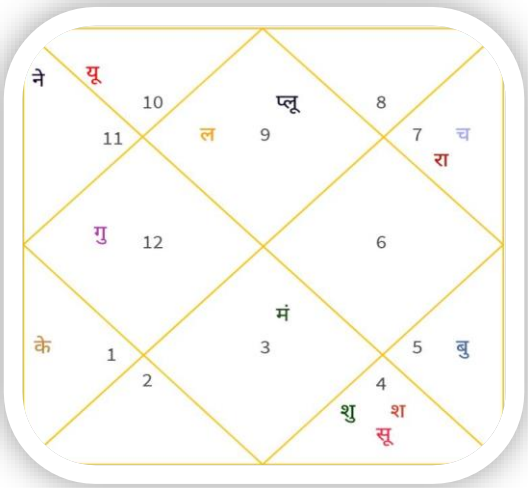


नवमांश कुंडली





चंद्र कुंडली



दशमांश कुंडली

*** मीनाक्षी ***

आपका जन्म लग्नेश सूर्य की महादशा में हुआ है जो लग्न से द्वादश भाव में चला गया है और शष्ठेश शनि के द्वारा पीड़ित है,

शनि की अंतर्दशा में जन्म हुआ है जो आपके छठे भाव का स्वामी अर्थात रोग भाव, शत्रु भाव, और अभाव के भाव, का स्वामी है

सूर्य की महादशा और शनि की अंतर्दशा, दोनों ग्रह एक दूसरे की नैसर्गिक शत्रु है और इस कुंडली के तात्कालिक शत्रु भी है

सूर्य मंगल और शनि के द्वारा द्वादश भाव में पीड़ित है और शनि, मंगल और केतु के द्वारा पीड़ित है
इन दोनों ग्रहों की दशाओं में जन्म होना यह दर्शाता है कि आपका जीवन संघर्षमय होगा।

लग्न : बुध लग्न स्थान में स्थित है, लग्न में बुध स्थित हो तो व्यक्ति दुबला पतला व फुर्तीला होता है, ऐसा व्यक्ति बिना काम के एक जगह पर ज्यादा समय तक बैठ नहीं सकता है, ऐसे लोग सुंदर और साफ वस्त्र पहनते हैं सज संवर कर रहते हैं इनकी मित्रता भी ऐसे ही लोगों से होती है जो साफ-सुथरे और अच्छे कपड़े पहने और सज संवर कर रहें होते हैं।

लग्नेश : लग्नेश का द्वादश स्थान में जाना और मंगल से पीड़ित होना भी यही दर्शाता है कि व्यक्ति दुविधा ग्रस्त होगा कभी-कभी ऐसे विचार भी आ सकते हैं कि यह संसार मेरे लिए नहीं है हालांकि जीवन के उत्तरार्ध में जातिका धर्म, अध्यात्म, मोक्ष आदि के संबंध में विचार करेगी व धर्म पथ पर चलने का प्रयत्न करेगी।

लग्नेश सूर्य व चतुर्थेश मंगल का द्वादश स्थान में जाना यह भी दर्शाता है की जातिका अपने घर से अपने जन्म स्थान से दूर अथवा विदेश वास करेगी

द्वादश स्थान में सूर्य का जाना यह भी दर्शाता है की जातिका का संबंध अपने पिता से मैत्रीपूर्ण नहीं होगा, इसके अलावा जातिका की नौकरी अथवा व्यवसाय में अवरोध भी आएंगे

द्वादश स्थान में सूर्य का मंगल व शनि की दृष्टि से पीड़ित होना, द्वादशेष चंद्रमा का छठे भाव में मंगल की दृष्टि के द्वारा पीड़ित होना यह दर्शाता है की नेत्र से संबंधित कोई समस्या हो सकती है आंखों में चोट लग सकती है।

द्वादश स्थान में स्थित सूर्य यह भी सूचित करता है कि व्यक्ति अनिद्रा ग्रस्त हो सकता है शैय्या सुख में कमी हो सकती है।

द्वादश स्थान में सूर्य का पीड़ित होना व छठे भाव में चंद्र गुरु का पीड़ित होना पेट से संबंधित समस्या दर्शाता है।

द्वितीयेश : बुध इस कुंडली का द्वितीयेश और एकादशेष है, द्वितीयेश बुध का लग्न में स्थित होना यह दर्शाता है की व्यक्ति आत्म केंद्रित है और कुछ कुछ स्वार्थी भी है, ऐसा बुध व्यक्ति को उत्तम धन भी प्रदान करता है, चूंकि यह बुध लग्न में अकेला ही स्थित है इसलिए ऐसा व्यक्ति दुविधा ग्रस्त होता है वह यही सोचता रह जाता है कि मैं यह करूं या वह करूं अक्सर ही वह ऐसी स्थिति से दो-चार होता है, इस व्यक्ति में उत्तम भाषण कला होती है अर्थात वक्तृत्व के गुणों से संपन्न होता है ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान भी होता है क्योंकि बुध बुद्धि का कारक भी है।

एकादशेष बुध का लग्न में स्थित होना यह भी दर्शाता है कि व्यक्ति स्वयं धन का उपार्जन करेगा अर्थात वह नौकरी अथवा व्यापार करेगा।

तृतीय भाव : तृतीय स्थान में शनि व्यक्ति को ज्ञान बुद्धि चातुर्य व साहस देता है यह शनि व्यक्ति को दीर्घायु भी बनाता है क्योंकि तृतीय भाव, अष्टम स्थान से अष्टम स्थान है और शनि आयु का कारक है, तृतीय भाव में स्थित शनि व्यक्ति को आलसी बनाता है, किंतु केतु भी शनि के साथ तृतीय स्थान में स्थित है जो व्यक्ति को क्रियाशील बनाए रखता है, तृतीय स्थान में शनि और केतु की स्थिति यह बताती है कि या तो जातिका के छोटे भाई बहन नहीं है और या फिर उनसे जातिका को किसी भी तरह का कोई सहयोग प्राप्त नहीं होगा

यह शनि इस कुंडली का शष्ठेश व सप्तमेश होकर तृतीय भाव से नवम भाव को दृष्ट करता है जिससे व्यक्ति का भाग्य दुष्प्रभावित होता है, सप्तमेश शनि का तृतीय स्थान में स्थित होना यह दर्शाता है की व्यक्ति व्यापार कर सकता है ऐसा व्यक्ति मीडिया अथवा जनसंचार माध्यम से जुड़ा हुआ व्यक्ति हो सकता है।

तृतीयेश : तृतीयेश शुक्र एकादश स्थान में गया है, तृतीय स्थान और एकादश स्थान यह दोनों ही उपचय स्थान है, जो तृतीय से नवम स्थान भी है इसलिए शुक्र का एकादश स्थान में जाना श्रेष्ठ धन योग निर्मित करता है, शुक्र इस कुंडली का दशमेश भी है दशमेश होकर एकादश स्थान में स्थित होना ऐसे व्यक्ति का सूचक है जो व्यवसाय को प्रमुखता देगा उसका दृष्टिकोण नव प्रयोगवादी व अनुसंधान

उन्मुख होगा ऐसे व्यक्ति को अपने से बड़ों की सहायता भी प्राप्त होती है ऐसे लोगों के मित्र भी बहुत होते हैं और इन्हें कम परिश्रम से ज्यादा लाभ मिलता है।

चतुर्थ भाव भावेश : चतुर्थ भाव पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं है, चतुर्थेश मंगल का द्वादश भाव में जाना यह दर्शाता है कि ऐसा व्यक्ति घर से दूर अर्थात विदेश जाएगा लेकिन मंगल का द्वादश भाव में नीच हो जाना सूर्य और शनि से पीड़ित होना यह दर्शाता है कि ऐसा व्यक्ति विदेश में समस्या ग्रस्त होगा, चूंकि यह मंगल नवमेश भी है और द्वादश भाव में स्थित है जिसका अर्थ यह है की जातिका विदेश में ही निवास करेगी, विदेश में उसका घर होगा और उसकी मृत्यु भी विदेश में ही होगी।

द्वादश स्थान में सूर्य से पीड़ित मंगल सिर दर्द व मस्तिष्क संबंधी कष्ट देता है व्यक्ति दुस्वप्न तथा निद्रा भंग से पीड़ित होता है मंगल की दृष्टि तृतीय भाव एवं सप्तम भाव पर पड़ती है जो काम त्रिकोण भाव हैं अतः व्यक्ति भौतिकवादी विचारों का होता है

मंगल के द्वादश स्थान में सूर्य और शनि के द्वारा पीड़ित होने से व्यक्ति ऋण ग्रस्त हो सकता है।

पंचम भाव भावेश : पंचम भाव पर शनि की दृष्टि है जो संतान सुख में कमी करती है किंतु शुभ ग्रह शुक्र की भी दृष्टि पंचम भाव पर है, पंचमेश गुरु छठे भाव में नीच हो गया है और मंगल की दृष्टि से पीड़ित भी है, गुरु की स्थिति

संतान के लिए अरिष्ट दायक है, संतान के स्वास्थ्य के लिए यह अच्छी स्थिति नहीं है

पंचमेश का छठे भाव में नीच हो जाना और क्रूर ग्रह मंगल की दृष्टि से पीड़ित होना यह दर्शाता है कि जातक का यह जन्म पूर्व जन्म के पाप कर्मों का फल प्राप्त करने हेतु हुआ है जातिका को इस जीवन में सभी तरह के कष्ट व रोग प्राप्त हो सकते हैं खास करके पेट या पेट के निचले हिस्से से संबंधित आंतो के रोग अथवा किडनी का रोग हो सकता है,
इसके अतिरिक्त जातिका धार्मिक प्रथाओं का अनुसरण नहीं करेगी, यह कलत्र दोष भी दर्शाता है अर्थात पति पत्नी के बीच मतभेद होंगे, चूंकि गुरु अष्टमेश भी है अतः फिर से वही बात दिखाई पड़ती है कि जातिका दीर्घ रोगों से पीड़ित होगी।

सप्तम सप्तमेश : ऊपर सप्तमेश शनि का तृतीय स्थान में स्थित होने का फल लिख दिया गया है, सप्तम भाव में मंगल की दृष्टि वैवाहिक जीवन में मतभेद या लड़ाई झगड़े का संकेत देती है।

अष्टम भाव भावेश : अष्टमेष गुरु के संबंध में ऊपर लिखा जा चुका है, अष्टम भाव पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं है इसका अर्थ यह है कि जातिका की आयू अच्छी है।

नवम भाव भावेश : नवम स्थान में राहु का स्थित होना और शनि की दृष्टि होना भाग्य को कमजोर करता है, व्यक्ति के विचार भ्रमित हो सकते हैं उसे पिता से लाभ प्राप्त नहीं होगा यह संतान अरिष्ट भी देता है,

नवमेश मंगल के फल ऊपर लिखे जा चुके हैं।

दशम भाव भावेश : दशम भाव पर पंचमेश अष्टमेश गुरु की दृष्टि है जो यह दर्शाती है की जातिका किसी बहुत अच्छे पद पर नहीं जा सकती, दशमेश शुक्र के फल ऊपर लिखे जा चुके हैं।

एकादश भाव : एकादश स्थान में शुक्र की स्थिति भौतिक सुख धन आनंद व सुविधाएं प्रदान करती है यह शुक्र स्वभाव में भी श्रेष्ठता प्रदान करता है, एकादशेष बुद्ध के बारे में ऊपर लिखा जा चुका है।

द्वादश भाव भावेश : द्वादश भाव में स्थित ग्रहों के संबंध में ऊपर लिखा जा चुका है, द्वादशेष चंद्र का षष्ठ स्थान में स्थित होना यह दर्शाता है की जातिका समृद्ध है एवं मनोहर शारीरिक संरचनावान है, लेकिन क्योंकि यह चंद्र षष्ठ स्थान में मंगल के द्वारा पीड़ित है और नीच गुरु के साथ स्थित है, वह गुरु जो अष्टमेश भी है यह दर्शाता है की जातिका को पेट के निचले हिस्से से संबंधित रोग हो सकते हैं।

द्वादश स्थान में लग्नेश सूर्य और मंगल का स्थित होना और इन दोनों ग्रहों पर शष्ठेश शनि की दृष्टि होना, द्वादशेष चंद्र का छठे भाव में अष्टमेश गुरु के साथ स्थित होना जातिका के लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकता है जैसे लड़ाई झगड़े या कोर्ट केस अतः जातिका को सावधान हो जाना चाहिए ऐसा कोई कर्म ना करें जिससे समस्याएं उत्पन्न हो ।

इस समय आपकी राहु की महादशा चंद्रमा की अंतर्दशा और सूर्य की प्रत्यंतर दशा चल रही है जो 14 मार्च 2022 तक है।

राहु/चंद्र/सूर्य : आपका लग्नेश सूर्य द्वादश भाव में मंगल व शनि की दृष्टि के द्वारा पीड़ित है और द्वादशेष चंद्रमा जो की अंतर्दशा नाथ है, वह छठे भाव में नीच गुरु के साथ और मंगल की दृष्टि से पीड़ित है, इसलिए इस दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ नरम रह सकता है सर्दी, जुकाम, बुखार आदि की समस्या होगी, यह भी हो सकता है कि कहीं आपका अपमान भी हो ।

राहु/मंगल -14.03.2022 to 01.04.2023 - मंगल आपकी कुंडली का चतुर्थेश और भाग्य होकर द्वादश भाव में नीच राशि में अस्त है, सूर्य और शनि के द्वारा पीड़ित भी है, राहु की महादशा है और मंगल की अंतर्दशा यह दोनों ही ग्रह नैसर्गिक शत्रु ग्रह हैं इसलिए इस दौरान मंगल के अशुभ प्रभाव देखने को मिलेंगे जैसे

- चूंकि मंगल चतुर्थ भाव का स्वामी है इसलिए घर के सुख में कमी होगी, यह भाग्य भाव का भी स्वामी है इसलिए भाग्य का साथ नहीं नहीं मिलेगा।

- मंगल की दृष्टि सप्तम भाव और सप्तमेश शनि पर है इसका अर्थ यह है की वैवाहिक जीवन में पति पत्नी के बीच मतभेद होंगे वाद विवाद की स्थिति बन सकती है

- चूंकि मंगल की दृष्टि पंचमेश और संतान कारक गुरु पर है व गुरु जो पंचम भाव से द्वितीय भाव में अर्थात मारक भाव में नीच राशि में वक्री स्थिति में मंगल की दृष्टि के द्वारा पीड़ित है, इसलिए बच्चों का स्वास्थ्य भी कमजोर हो सकता है क्योंकि मंगल जिसकी अंतर्दशा है वह संतान के अष्टम भाव में अस्त और पीड़ित है और गुरु उनके द्वितीय मारक भाव में नीच और पीड़ित है।

- इस दौरान किसी मित्र से भी आपका वाद विवाद हो सकता है।

- मंगल में शनि की प्रत्यंतर दशा का समय आपकी माता के लिए अच्छा नहीं है, उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है इसलिए उनका ख्याल रखें ।

- ❖ मंगल की अंतर्दशा के अंत में खास करके सूर्य और चंद्रमा की प्रत्यंतर दशा के समय पति के साथ वाद विवाद ज्यादा बढ़ सकता है, नौबत कोर्ट केस तक आ सकती है अतः इस बारे में आप लोगों को विचार करने की आवश्यकता है ।

इन सब से बचने के लिए पति पत्नी दोनों को चाहिए की प्रतिदिन * श्री राधा कृपा कटाक्ष * इस स्तोत्र का 1-1 पाठ प्रतिदिन करें, प्रतिदिन एक ही समय पर करें, पूजा करते समय जल्दबाजी ना करें, पूजा करते समय ध्यान पूरी तरह ईश्वर पर ही होना चाहिए तो ही इस पूजा का फल प्राप्त हो सकेगा, इससे लड़ाई झगड़े समाप्त होंगे कलह खत्म होगी, घर में प्रेम व सामंजस्य बढ़ेगा ।

गुरु /गुरु - 01.04.2023 से 25.05.2025 - गुरु इस कुंडली का पंचमेंश अष्टमेश होकर छठे भाव में नीच राशि में द्वादशेष चंद्रमा के नक्षत्र में स्थित है और मंगल की दृष्टि के द्वारा पीड़ित भी है, छठा भाव रोग, शत्रुता, अभाव आदि का भाव है ।

- ❖ क्योंकि गुरु अष्टमेश होकर छठे भाव में दुर्बल स्थिति में है अतः यह किसी लंबे चलने वाले रोग का सूचक हो सकता है

- ❖ 14 जुलाई 2023 के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, यह कोई गंभीर बात नहीं है, इसके अलावा आप को नौकरी मिल सकती है

- ❖ गुरु की महादशा में गुरु की अंतर्दशा आपके स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी नहीं होगी बच्चों के स्वास्थ्य के लिए भी यह अच्छी नहीं होगी, हालांकि बच्चों की शिक्षा के मामले में गुरु की अंतर्दशा अच्छी होगी, बच्चों का मन शिक्षा में लगेगा और उन्हें सफलता भी अच्छी मिलेगी, गुरु की अंतर्दशा आपको निश्चित रूप से धन भी प्रदान करेगी क्योंकि गुरु धन का कारक है और छठा भाव उपचय भाव भी है, गुरु की दृष्टि दशम भाव पर और धन भाव पर भी है इसलिए यह गुरु की अंतर्दशा धन की दृष्टि से आपके लिए अच्छी होगी ।

गुरु/शनि - 20.05.2025 to 01.12.2027 - गुरु की महादशा में शनि की अंतर्दशा वैवाहिक जीवन की दृष्टि से अच्छी नहीं है क्योंकि गुरु छठे स्थान में नीच और पीड़ित अवस्था में है, शनि शष्ठेश सप्तमेश होकर मंगल, केतु के द्वारा पीड़ित है और सप्तम भाव पर भी मंगल की दृष्टि है,

नवांश कुंडली में सप्तमेश शनि अष्टमेश भी बन जाता है और शष्ठेश गुरु के साथ द्वादश भाव में स्थित है, सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भी है, इसलिए शनि की अंतर्दशा अच्छे परिणाम नहीं देगी ।

शनि की अंतर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा आपके दाहिने हाथ या कंधे पर चोट दे सकती है ।

गुरु/बुध - 01.12.2027 to 08.12.2030 - गुरु की महादशा में बुध की अंतर्दशा धन की दृष्टि से और आपके कैरियर की दृष्टि से अच्छी साबित होगी क्योंकि यह बुध लाभ भाव और धन भाव का स्वामी होकर लग्न में स्थित है यह बुध नवांश कुंडली के दशम भाव में स्थित होकर दशमेश मंगल के द्वारा दृष्ट है इसलिए आपको अच्छा कैरियर देगा, यदि आप पर किसी भी तरह का कोई कर्ज है तो वह कर्ज समाप्त हो जाएगा और आपके पास धन की बचत होगी, आपकी आय भी अच्छी होगी ।

गुरु/केतु - 08.12.2030 to 14.02.2031 - केतु शुक्र की तुला राशि में स्थित है तो यह गीत शुक्र का फल प्रदान करेगा, चूंकि शुक्र तृतीय और दशम भाव का स्वामी होकर लाभ भाव में स्थित है अर्थात केतु दशम भाव का फल देगा यानी आपके कैरियर के लिए भी केतु की दशा अच्छी होगी और आपकी आय भी अच्छी होगी ।

गुरु/शुक्र - 14.02.2031 to 14.10.2033 - गुरु में शुक्र की अंतर्दशा आपके कैरियर की दृष्टि से अच्छी होगी क्योंकि शुक्र आपका तृतीयेश व दशमेश होकर लाभ भाव में स्थित है, किसी भी ग्रह के द्वारा पीड़ित भी नहीं है और नवांश कुंडली में यह शुक्र चतुर्थेश एकादशेष होकर पंचम भाव अर्थात एक शुभ त्रिकोण में धन भाव के स्वामी सूर्य के साथ धनयोग बना रहा है ।

गुरु/सूर्य - 14.10.2033 to 01.08.2034 - 16अप्रैल 2034 तक स्वास्थ्य से संबंधित समस्या हो सकती है, चिंता, बेचैनी, घबराहट आदि समस्या भी हो सकती है ।

गुरु/चंद्र - 01.08.2034 से 01.12.2035 - गुरु की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा में आप कहीं दूर की यात्रा करेंगे, यह यात्रा कैरियर से संबंधित हो सकती है, इस अंतर्दशा में आपकी वैवाहिक जीवन में भी कुछ तनाव देखने को मिलेगा, स्वास्थ्य के प्रति भी ध्यान रखने की जरूरत होगी क्योंकि गुरु और चंद्र दोनों ही रोग भाव में स्थित हैं और मंगल के द्वारा पीड़ित भी हैं, इस दशा में किसी भी तरह का कर्ज लेने की कोशिश ना करें ।

गुरु/मंगल - 01.12.2035 to 08.11.2036 - मंगल की अंतर्दशा में आपको जमीन अथवा मकान की प्राप्ति हो सकती है इसके अलावा धन की प्राप्ति भी होगी क्योंकि मंगल चतुर्थ और नवम भाव का स्वामी है अर्थात इस कुंडली का राजयोग कारक ग्रह है किंतु यह मंगल द्वादश भाव में अस्त है और शनि के द्वारा पीड़ित है इसलिए बहुत अच्छे परिणाम तो नहीं दे सकेगा लेकिन फिर भी जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है वह अवश्य मिलेगा ।

मंगल की अंतर्दशा में चंद्रमा की प्रत्यंतर दशा आपके विवाहित जीवन के लिए कठिन साबित हो सकती है क्योंकि मंगल आपके द्वादश भाव में अस्त और पीड़ित है जो सप्तम से छठा भाव है और चंद्रमा आपका द्वादशेष होकर आपके छठे भाव में नीच गुरु के साथ मंगल की दृष्टि के द्वारा पीड़ित है जो सप्तम भाव का द्वादश भाव भी है, यह चंद्रमा चंद्र कुंडली का सप्तमेश भी है और

नवमांश कुंडली का लग्नेश होकर अष्टम भाव में कुंभ राशि में स्थित है, अतः सप्तम भाव से संबंधित दुष्परिणाम भी देगा ।

गुरु/राहु - 08.11.2036 to 01.04.2039 - राहु अपनी अंतर्दशा में अपने राशीश मंगल का फल करेगा और अपने नक्षत्रेष शुक्र का फल करेगा, चूंकि मंगल चतुर्थ भाव और नवम भाव का स्वामी होकर द्वादश भाव में स्थित है इसलिए यह राहु चतुर्थ भाव नवम भाव और द्वादश भाव का फल करेगा, शुक्र तृतीय भाव, दशम भाव का स्वामी होकर एकादश भाव में स्थित है इसलिए यह राहु तृतीय, दशम एवं एकादश भाव का भी फल करेगा, राहु पर शनि की दृष्टि है इसलिए राहु के प्रभाव में शनि का प्रभाव भी सम्मिलित होगा

गुरु में राहु की अंतर्दशा सामान्य तौर पर शुभ नहीं होती है इस कुंडली में भी राहु गुरु का तात्कालिक शत्रु है, मानसिक रूप से आप समस्या ग्रस्त रहेंगी खास करके जब राहु में सूर्य, चंद्र, की प्रत्यंतर दशा होगी, लेकिन यह राहु भौतिक मामलों में शुभ परिणाम भी देगा कैरियर की दृष्टि से और धन की दृष्टि से यह राहु अच्छे फल भी देगा

इस कुंडली के तीनों धर्म त्रिकोण बुरी स्थिति में है, लग्नेश द्वादश भाव में शनि के द्वारा पीड़ित है, पंचमेश गुरु छठे भाव में मंगल के द्वारा पीड़ित है और वक्री भी है, नवमेश द्वादश भाव में अस्त व शनि के द्वारा पीड़ित है नवम भाव में राहु स्थित है और शनि की दृष्टि भी है, केंद्र स्थानों में एकमात्र ग्रह बुद्ध है, इसलिए इस कुंडली को एक कमजोर कुंडली कहा जा सकता है

आपकी कुंडली और ग्रह दशाओं को देखते हुए जरूरी है कि आप प्रतिदिन एक पाठ श्री विष्णु सहस्त्रनाम का करें, यदि आप समर्पित होकर प्रतिदिन श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करती है तो आपके जीवन में अनुकूलता अवश्य आएगी कुछ न कुछ लाभ अवश्य होगा

पूजा करने का पहला नियम, प्रतिदिन एक ही समय पर पूजा करें, दूसरा नियम जल्दबाजी ना करें, तीसरा नियम पूजा करते समय आपका ध्यान प्रभु पर होना चाहिए आपके दिमाग में अन्य इधर-उधर की बातें नहीं होनी चाहिए, चौथा नियम जो भी पाठ आप कर रही हैं वह तो संस्कृत में ही करना है किंतु उसका अर्थ आपको मालूम होना चाहिए स्तोत्र के प्रत्येक शब्द का अर्थ आपको मालूम होना चाहिए यदि इन चारों नियमों का पालन किया जाता है तो निश्चित ही आपके जीवन में अनुकूलता प्राप्त होगी ।

“ बुधवार को विष्णु सहस्त्र नामावली से स्वयं ही हवन करना है ”

“ 4-carat का माणिक्य सोने की अंगूठी में अनामिका उंगली में धारण कर सकती हैं ”

**** ईश्वर आपको समस्त सुख ऐश्वर्य एवं सदबुद्धि प्रदान करें ****

"**********"

।। ॐ भूर् भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।।

"**********"

This Kundli is created by Mr. Manoj Kumar Pandey, to stay connected with us, follow us on all social media by clicking on the links given below.



Follow us on :-

Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC-eEGE5mzO1rhD-EDS1rwwQ

Facebook Group:
https://www.facebook.com/groups/404532170730330

Facebook page: https://www.facebook.com/jyotishandresearch

THANK YOU !!